International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 6, Issue 3, March 2019
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com, editor@aarf.asia

कमत चुकानेवाले पुरूषार्थीयों के जीवन सद्धांतों की समीक्षाः

डॉ.अतुलकुमार बी. उनागर
आ सस्टन्ट प्रॉफेसर, संस्कृत वभाग
भाषा साहित्यभवन गुजरात यूनिव र्सटी अहमदाबाद

कमत चुकाने की तैयारी अर्थात खुद को वस्तारने की उत्कंट इच्छा। व्यक्ति आज जिस पद या परिस्थित पर हैं, वह भ वष्य में उसने चुकायी कमत का ही परिणाम हैं। कर्म के अनुसार ही फल मलता हैं। "आत्मदोषैर्नियच्छन्ति सर्वे सुखदुखे जानाः। हम सब हाल में जिस जगह पर पहुंचे हैं, वह पद हैं। प्रतिष्ठा को पाने के पश्चात वह बिते हुए कल की कमत का ही परिणाम हैं। कल आप अपने आपको जहाँ देखना चाहते हैं, वह भी आज चुकाई गई कमत का ही परिणाम होगा। मन पर काबु पाना अनिवार्य हैं।[1]

जिस तरह एक पहिए पर रथ चल सकता नहीं, उसी तरह कमत चुकाये बिना सद्धी मलती नहीं। जैसे क- यथा क - यथा हि एकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत्।

एवं पुरूषकारेण वना दैव न सध्यति।।

एक सनातन सत्य यह हैं क वश्व वख्यात बनी महान हस्ती जिसको इतिहास ने ध्यान में लया हो वह तमाम व्यक्तियों की सफलता का रहस्य भी उन्होंने खुद के जीवनकाल के दौरान खुखी होता हैं। "यत्नवान् सुखमेधते।

कमत चुकाने की तैयारी अर्थात अपने आपको प्रेम करते रहने का प्रमाण भाग्य पर छोड देना उ चत नहीं। [2]कोई इनसान यह कहे क मैं आसानी से सफल हुआ हूँ। मुझे जरा भी कमत चुकाने की नोबत ही नही आयी। यह सूनना दुर्लभ हैं। वेद वाणी ने वचरण पर भार रखा हैं।[3]

अततः कमत को चुकानेवाले व्यक्तियों ने ही इतिहास रचा हैं। जिसका महिमा गान हुआ हैं। जैसे क-

"आलस्य ही मनुष्याणां शरीरस्थो महानं रिपुः।
नास्तुध्यम्समो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।।

एक उद्यमी वद्यार्थी के लए कहा गया हैं क-

"आलस्य कुतोः वद्या अ वद्स्य कुतो धनम्।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

अधनस्य कुतो मत्रम, अ मत्रस्य कुतः सुखम्।।

कृष्ण भक्त मीराबाई एवं नर संह महेता ने भक्ति की पराकाष्ठा पर पहुंचकर संसार के तमाम सुखों के वैभव की कमत चुकायी हैं। भगवान श्री राम, हरिश्चन्द्र और राजा भरथरी को राज्य वैभव की कमत चुकानी पडी। आदि शंकराचार्य, ववेकानंद एवं दयानंद सरस्वती ने आध्यात्मिक क्राति के लए परिवार के साथ सामाजिक सुखों की कमत चुकायी हैं। पुरूषार्थ के बिना देव भी प्रसन्न नहीं होते। "पुरूषकारेण बिना दैवं न सध्य स"

कमत चुकाकर मली हुआ सफलता के लए इतने उदाहरण पर्याप्त हैं। सतत आगे बढ़ना चाहिए।[4]वे महापुरूष इस लए कहलाए क्यों क उन्होंने चुकायी कमत भी महान थी। इस लए तो कर्मशील व्यक्ति के लए कहा गया हैं क-

"बलवानप्यशक्तोसौ धनवान प निर्धनः।

श्रुतवान प मुर्खोअसौ यो धर्मे वमखो जनः।।

एक महत्त्वपूर्ण सद्धांत यह हैं क आप जितनी कमत चुकाओगे उतनी ही पाओगे। ज्यादा कमत चुकानेवाला ज्यादा पाता हैं। जो चलता हैं, उसका भाग्य सोता हैं। जो दौड़ता हैं, उसका भाग्य भी दौडता हैं। जो बैठा हैं, उसका भाग्य भी बैठा हैं।[5]कम कमत चुकानेवाला कम ही पाता हैं।"श्रमेण लभ्यं सकलं न श्रमेण वना क्व चत्।

सरलांड्गु ल संघर्षात् न निर्याति घनं धृतम्।।यहाँ कमत के भी सार होते हैं।

क लः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः।

अत्तिष्ठस्त्रेता भवति कृतं संपाद्यते चरंश्चरैवेति।।

(ऐतरेय ब्राह्मण, अध्याय 03, खण्ड 03)

अर्थः शयन की अवस्था क लयुग के समान है। जगकर सचेत होना द्वापर के समान हैं, उठ खडा होना त्रेता सदृश हैं और उद्यम में संलग्न एवं चंतनशील होना कृतयुग (सत्युग) के समान हैं। अतः तुम चलते ही रहो। (चर एव)

आपकी कौन से स्तर तक कमत चुकाने की तैयारी हैं, यह महत्त्वपूर्ण हैं। उदाहरण स्वरूप कोई साधक, कोई निश्चित अवस्था को पाने की ईच्छा रखता हैं, तो वह निश्चित अवस्था का भी चौकस मूल्य हैं। तदनुसार वह मूल्यवान अवस्था को जब पाना ही हैं तो उसके मूल्य जितनी कमत चुकाने की तत्परता और पुरूषार्थ अनिवार्य बनता हैं। कर्म की महिमा श्रीमद भगवद् गीता ने गायी हैं।[6]आलस वृत्ति खतरनाक हैं।

षड्दोषाः पुरूषेणेह हातव्या भूति मच्छता।

निद्रा तद्रा भयं क्रोधः आलस्यं दीर्घसूत्रता।।

कोई व्यक्ति संगीत में वशारद बनने की इच्छा रखता हो, पर रियाज करना पसंद ना हो तो वह अच्छा संगीतकार नहीं बन सकता।[7]कोई खलाडी राज्य कक्षा पर वजेता होने की महेच्छा रखता हैं, पर हररोज व्यायांम करने में आलस रखे तो ? हमें कसी भी तरह के ऊँचे

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

से ऊँचे पद, प्रतिष्ठा, वैभव और अवस्था को पा सकते हैं, परंतु उसके स्तर अनुरूप कुरबानी देने की उत्कंठा और मेहनत अनिवार्य हैं। धीर पुरूष स्वबल पर आगे बढते हैं।(8)

कमत चुकाने की इच्छा अंदर से होनी चाहिए। कसीके द्वारा दी गई प्रेरणा कामचलाउ होती हैं। जैसे क- स्वभावो नोपदेशेन शक्यते कर्तुमन्यथा।

सुप्तम प पानीयं पुनर्गच्छति शीतताम्।।

अब आप निश्चित करे क आपको कहाँ तक पहुंचना हैं ? आप जीवन में जो कुछ भी हा सल करना चाहते हो, वही आपका जीवन ध्येय हैं। उसका मूल्य जितना होगा उसकी कल्पना करे। मलनेवाला फल अपने स्तर के अनुरूप हैं या नहीं ? यदि 'हाँ'तो फर उसके स्तर की सच में आप कमत चुकाने के लए तैयार हैं। कसी भी कुरबानी के लए आप में हिंमत हैं ? छोटी-बडी सफलता की ओर आगे बढते इनसान ने कम या ज्यादा प्रमाण में कमत तो चुकानी ही पडती हैं। याद रखना चाहिए एक प्र सद्ध सुभा षत हैं-

"उद्यमेन हि सध्यन्ति कार्या ण न मनोरथैः।

न ही सुप्तस्य संहस्य प्र वशन्ति मुखे मृगाः।।

ऊँची और टकाउ इमारतें सरलता से नहीं बनती। हमने इस देश एवं दुनिया में कुछ खास काम करने के लए जन्म धारण कया हैं। हमें ऐसे ही धक्के खाने नही हैं। हमें ईश्वरीय कार्य करने हैं। अब आप यह स्वीकार करोगे की ईश्वरीय कार्य तो बहुत बडी कुरबानी मांगेगा। अर्थात सामाजिक कार्यों के लए तो बहुत ऊँची कमत चुकानी पडती हैं। पहले यह सोचना चाहिए क क्या सच में हम समाज की जा गर हैं ? यदि हाँ तो चलों नर संह के मार्ग पर आगे बढते हैं। समय बिगाडना हमारे लए अच्छा नहीं। हमें कर्म करते रहना चाहिए।(10)

हमारी समाज व्यवस्था में हमें भन्न भन्न प्रकार की भू मकाएँ निभानी होती हैं। आदर्श माता पता, श्रेष्ठ संतान, प्रामा णक नागरिक, संस्था के कार्य में वफादार नागरिक आदि अनेक प्रकार के यह सभी स्थल पर सफल होने के लए हर आदर्श भू मका की चौकस कमत होती हैं। वह कमत हमें चुकानी ही हैं, अन्यथा कसी भी भू मका में सफलता नहीं मलेगी।

यह पुण्यभू म भारत देश हैं। यहाँ इनसान को ईश्वर बनने का सौभाग्य प्राप्त होता हैं। आप ऊँचे से ऊँची कल्पना कर लो, क्यों क वह संभव हैं। कोई व्यक्ति ऐसा निश्चय करे क मैं वश्वगुरु बनुं तो वह भी संभव हैं। कोई व्यक्ति यह प्रतिज्ञा करे क इस देश को गरीबी मुक्त बनाना हैं, तो वह भी संभव हैं। आप जो भी बदलना चाहते हैं, जो भी बंधारण बनाना चाहते हैं, जो भी स्था पत करना चाहते हैं वह सब संभव हैं। कुछ भी असंभव नहीं हैं। यहाँ उसके समकक्ष प्रमाण में हमारी कमत चुकाने की तत्परता, प्रतिष्ठा, परिश्रम और आनंद का सायुज्य होना आवश्यक हैं। आपकी भी जरूर कोई महेच्छा होगी, तो च लए...।

यथा चतं तथा वाचो यथा वाचस्थता क्रयाः।

चते वा च क्रयायाचं साधुनामेक्रुपता।।

संदर्भसूचीः

1 असंशय महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलं।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।।
श्रीमद् भगवद् गीता-6.35

2 न दैवम प सञ्चित्य त्यजेदुद्योगमात्मनः।
अनुद्योगेन कस्तैलं तिलेभ्यः प्राप्तुमर्हति।।
(हितोपदेश, मत्रलाभ, 30)

3 पुष्पिण्यौ चरतो जड्घे भूष्पुरात्मा फलग्रहिः।
शेरेडस्य सर्वे पाप्मानः श्रमेण प्रपथे हतश्चैरवेति।।
(ऐतरेय ब्राह्मण, अध्याय,03 खण्ड, 03)

4 चरैवेति चरैवेति (ऐतरेय ब्राह्मण, अध्याय,02)

5 आस्ते भग आसीनस्योध्ववस्तिष्ठतिः।
शेते निपद्यमानस चराति चरतो भगश्चरैवेति।।
(ऐतरेय ब्राह्मण, अध्याय,03/03)

6 संन्यासं कर्मणा कृष्ण पुनर्योग च शंस स।
यच्छैय एतयोरेक तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम्।।
श्रीमद् भगवद् गीता-05-01

7 कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिन्द्रियैर प।
यो गनः कर्म कुर्वन्ति संड्ग त्यक्त्वात्मशुद्धये।।
श्रीमद् भगवद् गीता-05-11 (07)
कृति सर्वत्र लभते प्रतिष्ठां भाग्यसंयुताम्।
अकृति लभते भ्रष्टः क्षते क्षारावसेचनम्।।
महाभारत अनुशासन पर्व 06/11

8 न याचेत् परान् धीरः स्वबाहुबलमाश्रयत्।।
महाभारत, अनुशासन पर्व 145

9 पौरूषं हि परं मन्ये दैवं निश्चितमुच्यते।।
महाभारत शान्तिपर्व 56/15

10 कुर्वन्नेवेह कर्मा ण जिजी वषैच्छतँ समाः।।
यजु.सं.40.02